इकाई 1 छन्दशास्त्र का परिचय

इकाई की रुपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 आचार्य पिङ्गल का जीवनवृत्त एवं कर्तृत्व

1.3 आचार्य पिङ्गल का जन्मस्थान

1.4 छन्दशास्त्र का परिचय

1.5 सारांश

1.6 शब्दावली

1.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.8 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

इस इकाई के अन्तर्गत आप–

- छन्द शब्द से परिचित हो जायेंगे।
- आचार्य पिङ्गल के जीवनवृत्त, कर्तृत्व एवं जन्मस्थान के बारें में परिचित हो पायेंगे।
- छन्दशास्त्र ग्रन्थ की विषयवस्तु से परिचित हो पायेंगे।
- छन्दसूत्र की प्रमुख टीकाओं और भाष्यों से परिचित हो पायेंगे।
- प्रयुक्त तकनीकि शब्दावली से परिचित हो पायेंगे।

1.1 प्रस्तावना

छन्द शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है। 'छन्दस्' वेद का पर्यायवाची नाम है। सामान्यतः वर्णों और मात्राओं की गेय–व्यवस्था को छन्द कहा जाता है। इसी अर्थ में पद्य शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। पद्य अधिक व्यापक अर्थ में प्रयुक्त होता है। भाषा में शब्द और शब्दों में वर्ण तथा स्वर रहते हैं। इन्हीं को एक निश्चित विधान से सुव्यवस्थित करने पर 'छन्द' का नाम दिया जाता है।

छन्दशास्त्र इसलिये अत्यन्त पुष्ट शास्त्र माना जाता है क्योंकि वह गणित पर आधारित है। वस्तुतः देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि छन्दशास्त्र की रचना इसलिये की गई जिससे अग्रिम सन्तति इसके नियमों के आधार पर छन्दरचना कर सके। छन्दशास्त्र के ग्रन्थों को देखने से यह भी ज्ञात होता है कि जहाँ एक ओर प्रस्तार आदि के द्वारा आचार्य छन्दों को विकसित करते रहे वहीं दूसरी ओर कविगण अपनी ओर से छन्दों में किंचित् परिवर्तन करते हुए नवीन छन्दों की सृष्टि करते रहे, जिनका छन्दशास्त्र के ग्रन्थों में कालान्तर में समावेश हो गया।

छन्दों के प्रमुख लाभ हैं–

1. छन्द भावों को सूक्ष्म रूप देते हुये पद्यात्मक बनाता है।
2. छन्द गेय होते हैं। सरलता से स्मरण होते हैं।
3. छन्दों में अनावश्यक विस्तार न होकर सूत्र रूप में बात कही जाती है।
4. छन्दों में मधुरता है, आकर्षण है, संगीतात्मकता और स्थायित्व है।
5. छन्द काव्य को स्थायित्व देते हैं, गद्य नहीं।
6. छन्द–रचना प्रतिभा का प्रकाशन है।

प्राचीन संस्कृत वाङ्मय में छन्दःशास्त्र के लिए अनेक नामों का व्यवहार उपलब्ध होता है–छन्दोविचिति, छन्दोमान, छन्दोभाषा, छन्दोविजिनी, छन्दोविजिति (छन्दोविजित), छन्दोनाम, छन्दोव्याख्यान, छन्दसांविच्य, छन्दसांलक्षण, छन्दःशास्त्र, छन्दोऽनुशासन, छन्दोविवृति तथा वृत्त एवं पिङ्गल।

इस इकाई–1 में छन्दशास्त्र के परिचय के अर्न्तगत छन्द शब्द का अर्थ, आचार्य पिङ्गल का जीवनवृत्त एवं कर्तृत्व एवं जन्मस्थान छन्दशास्त्र ग्रन्थ की विषयवस्तु तथा छन्दसूत्र की प्रमुख टीकाओं और भाष्यों को स्पष्ट किया जायेगा।

1.2 आचार्य पिङ्गल का जीवनवृत्त एवं कर्तृत्व

ऐतरेय ब्राह्मण में छन्द शास्त्र का प्रारम्भ होता है। आचार्य पिंगल प्रारम्भ के आचार्यों में हैं। पिंगल का छन्दः सूत्र वैदिक और लौकिक दोनों प्रकार के छन्दों का प्रामाणिक ग्रंथ है। पिंगल की भाषा सूत्रात्मक होने से कठिन है। इस पर टीकाएँ तथा व्याख्याएँ हो चुकी हैं। यही छन्दशास्त्र का सर्वप्रथम ग्रन्थ माना जाता है। इसके पश्चात् इस शास्त्र पर संस्कृत साहित्य में अनेक ग्रन्थों की रचना हुई। दसवीं शती में हलायुध ने इस पर **मृतसञ्जीवनी** नामक भाष्य की रचना की। इस ग्रन्थ में पास्कल त्रिभुज का स्पष्ट वर्णन है। इस ग्रन्थ में इसे मेरु–प्रस्तार कहा गया है। इसमें आठ अध्याय हैं।

अन्य टीकाएं–

- लक्ष्मीनाथसुतचन्द्रशेखर –– पिङ्गलभावोद्यात
- चित्रसेन –– पिङ्गलटीका
- रविकर –– पिङ्गलसारविकासिनी
- राजेन्द्र दशावधान –– पिङ्गलतत्वप्रकाशिका
- लक्ष्मीनाथ –– पिङ्गलप्रदीप
- वंशीधर –– पिङ्गलप्रकाश
- वामनाचार्य –– पिङ्गलप्रकाश

छन्दशास्त्र की रचना कब हुई, इस सम्बन्ध में कोई निश्चित विचार नहीं दिया जा सकता। किंवदन्ति है कि महर्षि वाल्मीकि आदिकवि हैं और उनका रामायण नामक काव्य आदिकाव्य है। **'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वं गमः शाश्वती समाः यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधिः काममोहितं'** यह अनुष्टुप छन्द वाल्मीकि के मुख से निकला हुआ प्रथम छन्द है जो शोक के कारण सहसा श्लोक के रूप में प्रकट हुआ। यदि इस किंवदन्ती को मान लिया जाए तो छन्द की रचना पहले हुई और छन्दशास्त्र उसके पश्चात् आया। वाल्मीकीय रामायण में अनुष्टुप छन्द का प्रयोग आद्योपान्त हुआ ही है,

अन्य उपजाति आदि का भी प्रयोग प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है।

एक अन्य किंवदन्ती यह है कि छन्दशास्त्र के आदि आविष्कर्ता भगवान् शेष हैं। एक बार गरुड़ ने उन्हें पकड़ लिया। शेष ने कहा कि हमारे पास एक अप्रतिम विद्या है जो आप सीख लें, तदुपरान्त हमें खाएँ। गरुड़ ने कहा कि आप बहाने बनाते हैं और स्वरक्षार्थ हमें विभ्रमित कर रहे हैं। शेष ने उत्तर दिया कि हम असत्य भाषण नहीं करते। इस पर गरुड़ ने स्वीकार कर लिया और शेष उन्हें छन्दशास्त्र का उपदेश करने लगे। विविध छन्दों के रचनानियम बताते हुए अन्त में शेष ने **'भुजङ्गप्रयाति'** छन्द का नियम बताया और शीघ्र ही समुद्र में प्रवेश कर गए। गरुड़ ने इसपर कहा कि तुमने हमें धोखा दिया, शेष ने उत्तर दिया कि हमने जाने के पूर्व आपको सूचना दे दी। **'चतुर्भियकारैर्भुजङ्गप्रयातम्'** अर्थात् चार गणों से भुजङ्गप्रयाति छन्द बनता है और प्रयुक्त होता है। इस प्रकार छन्दशास्त्र का आविर्भाव हुआ। इससे प्रतीत होता है कि छन्दशास्त्र एक दैवीय विद्या के रूप में प्रकट हुआ। इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि इसके आविष्ककर्ता **'शेष'** नामक कोई आचार्य थे जिनके विषय में इस समय कुछ विशेष ज्ञान और सूचना नहीं है। इसके पश्चात् कहा जाता है कि शेष ने अवतार लेकर पिंगलाचार्य के रूप में छन्दसूत्र की रचना की, जो पिंगलशास्त्र कहा जाता है। यह ग्रंथ सूत्रशैली में लिखा गया है और इस समय तक उपलब्ध है। इसपर टीकाएँ तथा व्याख्याएँ हो चुकी हैं। यही छंदशास्त्र का सर्वप्रथम ग्रंथ माना जाता है। इसके पश्चात् इस शास्त्र पर संस्कृत साहित्य में अनेक ग्रंथों की रचना हुई।

छन्दशास्त्र संस्कृत साहित्य में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। इस शास्त्र का प्राचीन नाम **'छन्दोविचिति'** है। इस **'छन्दोविचिति'** का अर्थ है वह ग्रन्थ जिसमें छन्दों का विशेष रुप से चयन (चिति, संग्रह) किया गया हो। इस शब्द का निर्देश पाणिनि के गणपाठ (4/3/73) में उपलब्ध होता है तथा इसका प्रयोग कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मिलता है– **'शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तिश्छन्दोविचितिर्ज्योतिषमिति चाङ्गानि।' 1/3** इस शास्त्र के छन्दोऽनुशासन, छन्दोविवृति, छन्दोमान आदि नाम भी मिलते हैं। आचार्य पिंगल के द्वारा निर्मित ग्रन्थ इस शास्त्र का इतना मान्य तथा प्रामाणिक ग्रन्थ है कि उसी नाम के आधार पर पूरा शास्त्र ही 'पिंगल' के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

छन्दशास्त्र का ज्ञान वेद तथा लोक दोनों के लिए आवश्यक है। छन्द का ज्ञान प्रत्येक वैदिक मन्त्र के लिए नितान्त उपयोगी माना जाता है, उच्चारण के लिए भी तथा अर्थज्ञान के लिए भी। आर्षेय ब्राह्मण तथा तदनुसारी सर्वानुक्रमणी में स्पष्ट प्रतिपादित है कि जो व्यक्ति मन्त्र के छन्द, ऋषि, देवता तथा ब्राह्मण बिना जाने हुए उससे यज्ञ कराता है अथवा पढ़ाता है, वही पापी होता है। उसका सकल अनुष्ठान गड्ढे में गिर जाता, अर्थात् व्यर्थ हो जाता है–**यो ह वा अविदितार्षेयच्छन्दोदैवतब्राह्मणेन मन्त्रेण याजयति वाऽध्यापयति वा स्थाणु वर्च्छति, गर्ते वा प्रपद्यते, प्र वा मीयते, पापीयान् भवति। यातया मान्यस्य च्छन्दासि भवन्ति।** (दुर्ग की निरुक्त टीका तथा सर्वानुक्रमणी का आरम्भ) वेद के अर्थज्ञान के लिए भी छन्दशास्त्र की उपयोगिता गवेषणीय है। छन्द वेदपुरुष का पादास्थानीय है। जिस प्रकार पैरों के द्वारा ही पुरुष की गति तथा स्थिति होती है, उसी प्रकार वेद छन्दों के आधार पर ही खड़ा होता है, क्योंकि समस्त वेद छन्दोमय विगह है। फलतः आधार भूत छन्दों का वेद के लिए अंगभूत होना नितान्त उपयुक्त है। **'छन्दः पादौ तु वेदस्य'** (पाणिनीय शिक्षा) छन्द के दो भेद वैदिक एवं लौकिक छन्द हैं। वैदिक=वेद मंत्रों में प्रयुक्त छन्द तथा लौकिक=रामायण, महाभारत तथा संस्कृत काव्यों में प्रयुक्त छन्द है।

छन्दशास्त्र के प्रवर्तक आचार्य पिङ्गल हैं। इनके द्वारा रचित छन्द शास्त्र वैदिक एवं लौकिक दोनों प्रकार के छन्दों के प्रतिपादन की दृष्टि से यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है। पिङ्गलकृत छन्दशास्त्र में कुल आठ अध्याय हैं। इनमें से प्रारम्भ के तीन अध्यायों और चतुर्थ अध्याय के साँतवे सूत्र तक आचार्य पिङ्गल ने वैदिक छन्दों का प्रतिपादन किया है और चतुर्थ अध्याय के आठवें सूत्र से लेकर आठवें अध्याय तक लौकिक छन्दों का निरूपण किया है। इस प्रकार वैदिक छन्दों का वर्णन 104 सूत्रों में तथा लौकिक छन्दों का निरूपण 204 सूत्रों में है।

लौकिक छन्दों का विकास कब सम्पन्न हुआ? इस प्रश्न का यथार्थ उत्तर देना जरा कठिन है। लौकिक छन्दों का सर्वप्रथम विवरण आचार्य पिङ्गल ने प्रस्तुत किया। यह कथन यथार्थ नहीं है, क्योंकि उन्होंने अपने ग्रन्थ के लौकिक छन्दों के विवरण देने के प्रसंग में प्राचीन आचार्यों का मत दिया है। आचार्य सैतव का मत अनुष्टुप के प्रसंग में 518 उल्लिखित है। उनके अनुसार अनुष्टुप के प्रतिचरण में नियमानुसार सप्तम वर्ण को लघु रखना चाहिए। 'वसन्ततिलका' वृत्त को आचार्य काश्यप 'सिन्होन्नता' तथा आचार्य सैवत 'उद्घर्षिणी' की संज्ञा देते हैं। दण्डक के विवरण प्रसंग में आचार्य रात तथा आचार्य माण्डव्य के मत का उल्लेख पिंगल में है। प्राचीन आचार्यों के इस समुल्लेख से स्पष्टत प्रतीत होता है कि लौकिक छन्दों का आविर्भाव पिङ्गल से अति प्राचीन युग की व्यवस्थित घटना है। आचार्य यादव प्रकाश की प्रथम छन्द परम्परा का विश्लेषण बतलाता है कि माण्डव्य पिङ्गल के चार पीढ़ी पूर्व होने वाले आचार्य हैं, जिससे लौकिक छन्दों के विवरण का युग पर्याप्त रूपेण प्राचीन सिद्ध होता है। पाणिनीय अष्टाध्यायी के स्वरूप का सामान्य विश्लेषण रोचक सिद्ध होता है। पाणिनीय अष्टाध्यायी के निर्माण से पूर्व लौकिक छन्दों के व्याख्यानकर्ता ग्रन्थ थे जो इसकी सुव्यवस्था तथा प्रतिपादनकौशल के कारण अस्तंगत हो गये। 'षड्गुरुशिष्य' के अनुसार पाणिनी अग्रज थे तथा पिंगल उनके अनुज। यदि यह परम्परा मान्य हो तो इस भ्रातृद्वय का यह कार्य अनेक रूप में समानान्तर था और अपने–अपने शास्त्र के व्याख्यान में पूर्णतया सफल था। इस प्रसंग में एक अन्य तथ्य ध्यातव्य है। महर्षि पाणिनी ने 'जाम्बवती विजय' अथवा 'पातालविजय' नामक 18 सर्गों तक विस्तृत महाकाव्य का प्रणयन किया था। जिसके कतिपय पद्य ही सूक्ति संग्रहों तथा अन्य ग्रन्थों में उपलब्ध होती है। इसमें स्रग्धरा, शार्दूविक्रीडित जैसे बृहदाकार वृत्तों में पद्यों का निर्माण है। पाणिनी 'उपजाति' वृत्त के सिद्धहस्त कवि थे।

ऐसे छन्दों का निर्माण एक दो दिनों की घटना नहीं है, प्रत्युत वर्षों के प्रयास से उनमें स्निग्धता तथा चिक्कणता आयी है। लौकिक छन्दों की इस प्रयोगमयी दिशा से भी विचार करने पर इनका आविर्भाव पाणिनी से प्राचीन काल की घटना सिद्ध होती है। आचार्य पिङ्गल का ग्रन्थ समुपलब्ध लौकिक छन्द ग्रन्थों में सर्वप्राचीन है। इनका अपना छन्दशास्त्रीय ग्रन्थ '**छन्दसूत्र**' या '**छन्दशास्त्र**' दोनों ही नाम से प्रचलित है। इस ग्रन्थ में आचार्य ने कतिपय आचार्यों यथा क्रौष्टुकि, ताण्डि, सैतव, काश्यप आदि छन्दशास्त्रीय आचार्यों के मतों का उल्लेख किया है।

1.3 आचार्य पिङ्गल का जन्मस्थान

आचार्य पिङ्गल के जन्मस्थान के विषय में यथार्थ परिचय नहीं मिलता। केवल उनकी एक मात्र रचना उन्हीं के नाम से प्रख्यात 'पिङ्गल छन्दसूत्र' अथवा 'पिङ्गल छन्दशास्त्र' है। इनके प्रख्यात वृत्तिकार हलायुध ने इस रचना के लिए द्वितीय अभिधान अपनी वृत्ति के अन्त में दिया है–

'पिङ्गलाचार्यरचिते छन्दशास्त्रे हलायुध।
मृतसञ्जीवनी नाम वृत्ति निर्मितवानिमाम्।।'

पिङ्गल के देशकाल का निर्णय प्रमाणों के अभाव में यथार्थतः नहीं किया जा सकता। पिङ्गल को पाणिनी का अनुज मानने वाली परम्परा (षड्गुरुशिष्य द्वारा उल्लिखित) यदि अन्य प्रमाणों से परिपुष्ट हो तो ये भी शालातुर के निवासी तथा विक्रमपूर्व लगभग अष्टमशती के ग्रन्थकार माने जा सकते हैं। यूरोपीय विद्वान् इन्हें ईस्वीपूर्व द्वितीय शती में मानते हैं, परन्तु उससे भी प्राचीन मानने में कोई व्याघात नहीं है। शबर स्वामी ने पिङ्गल का नाम तथा उनके द्वारा निर्दिष्ट सर्वगुरु 'मगण' अपने भाष्य में निर्दिष्ट किया है–**'यथा मकरेण पिङ्गलस्य सर्वगुरुस्त्रिकः प्रतीयेत' (शाबरभाष्य, 1/15)** पतंजलि ने अपने महाभाष्य के नवाह्निक में एक स्थल पर पिङ्गल काण्व (आह्निक 9 सू. 73) शब्द का उल्लेख किया है, जिससे इनकी पतंजलि से पूर्वकालिकता निश्चितरूपेण सिद्ध होती है।

पुराणों में पिङ्गल नामक नाम का उल्लेख अनेक स्थलों पर मिलता है। वामन पुराण में ये प्रातः स्मरणीय आचार्यों में आसुरि के साथ निर्दिष्ट किये गये हैं–

'सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः।
सनातनोऽप्यासुरिपिङ्गलो च।।' (वामनपुराण, 14/25)

अग्निपुराण में अध्याय 328 से लेकर 335 अध्याय तक आठ अध्यायों में वर्णित यह छन्दोनिरूपण पिङ्गल के आधार पर स्वयं पुराणकार ने निर्दिष्ट किया है–**'छन्दो वक्ष्ये मूलजैस्तैः पिङ्गलोक्तं यथाक्रमम्।' (अग्निपुराण, 328/1)** नारदपुराण वाला छन्दोविवरण भी पिंगलानुसारी ही है। इन पौराणिक उल्लेखों से पिंगल की प्राचीनता निश्चितरूपेण सिद्ध होती है परन्तु इसके आधार पर इदमित्थं रूप से कथन दुःसाध्य है। इनके देश का पता लगाना और भी दुष्कर कार्य है। छन्दों के नामो में भौगोलिक संकेत का आभास मिलता है। अपरान्तिका (4/41) तथा वनवासिका (4/43) में पिङ्गल ने अपने वृत्तों के नाम दिये हैं। तथ्यतः ये दोनों शब्द अपरान्त तथा वनवास देश के स्त्रीजनों के लिए प्रयुक्त होते हैं। अपरान्त तथा वनवास ये एक दूसरे से संलग्न प्रान्त बम्बई प्रान्त के पश्चिम समुद्रस्थ प्रदेश कोंकण को सूचित करते हैं। फलतः पिङ्गल का इस समुद्रस्थ प्रान्त के लिए कोई पक्षपात प्रतीत होता है। पंचतंत्र का यह कथन भी कि –**'छन्दोज्ञाननिधिं जघान मकरो वेलातटे पिङ्गल' (पंचतंत्र 2/26)** अर्थात् समुद्रतट पर छन्दोज्ञान के निधि पिङ्गल को मकर ने मार डाला था । अतः इस आधार पर छन्दसूत्रकार आचार्य पिङ्गल का पश्चिम समुद्र के तट तथा दक्षिणी कोंकण का निवासी स्वीकार किया जा सकता है।

1.4 छन्दशास्त्र का परिचय

पिङ्गल ने अपने छन्दशास्त्र को आठ अध्यायों में बांटा है। यह ग्रन्थ सूत्रबद्ध है। यह अष्टाध्यायी छन्दशास्त्र केवल तीन सौ आठ (308 सूत्र) सूत्रों का स्वल्पकाय ग्रन्थ है, परन्तु महत्व की दृष्टि से नितान्त प्रामाणिक तथा अनुपम गौरवमयी है। इन अध्यायों में आरम्भ के तीन अध्याय तथा चतुर्थ के सात सूत्र वैदिक छन्दों का विवरण प्रस्तुत करते हैं तथा इनसे आगे के अध्याय लौकिक छन्दों का वर्णन करते हैं। वैदिक छन्दों का वर्णन केवल 97 सूत्रों में तथा लौकिक छन्दों का 211 सूत्रों में है। लौकिक वृत्त दो प्रकार के होते हैं– मात्रावृत्त तथा वर्णवृत्त। जिनमें वर्णवृत्त सम, अर्धसम तथा विषमभेद

से तीन प्रकार का होता है। पिङ्गल के चतुर्थ अध्याय में मात्रावृत्तों का, पंचम, षष्ठ तथा सप्तम में त्रिप्रकार वर्णवृत्तों का विवरण है। अन्तिम (अष्टम) अध्याय में छन्द के प्रस्तार आदि भेदों (षट्प्रत्यय) का प्रतिपादन है। इस प्रकार पिङ्गल सूत्र परिणाम में है थोड़ा ही, परन्तु इतने स्वल्प रूप में ही यह सभी जानने योग्य छन्दों का विवरण प्रस्तुत कर देता है। शास्त्रीय विवेचन उसका सबसे बड़ा वैशिष्ट्य है।

जिसकी विषयवस्तु क्रमशः इस प्रकार है–

प्रथम अध्याय– प्रथम अध्याय में आचार्य पिङ्गल ने सर्वप्रथम छन्द शास्त्र के दशाक्षरों म, य, र, स, त, ज, भ, न, ग और ल का वर्णन, गणविचार तथा लघु–गुरु लक्षण का निर्देश 15 सूत्रों में किया है।

द्वितीय अध्याय–द्वितीय अध्याय में गायत्री छन्द के विभिन्न भेदों तथा छन्दों का उल्लेख आचार्य पिङ्गल ने 16 सूत्रों में निबद्ध किया है।

तृतीय अध्याय–तृतीय अध्याय में छन्द पाद का विचार है। एक पाद में प्रयुक्त विभिन्न छन्दों की अक्षर संख्याओं के निर्देश के साथ–साथ गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप, बृहती, पंक्ति, जगती आदि वैदिक छन्दों के पाद लक्षणों का 66 सूत्रों में उल्लेख किया है।

चतुर्थ अध्याय–चतुर्थ अध्याय के प्रारम्भिक सात सूत्रों में उत्कृति आदि वैदिक छन्दों की चर्चा के पश्चात् इसी अध्याय के आठवें सूत्र से लौकिक छन्द अर्थात् लोक के मध्य प्रयुक्त आर्या, वैतालीय तथा मात्रा समक का भेदों सहित विवेचन किया है और अन्त में चूलिका छन्द की चर्चा है। ये छन्द मात्रिक छन्द के अन्तर्गत आते हैं और इनके लक्षणों के लिए पिङ्गल ने **'लः समुद्रा गणः'(4/12)** का प्रयोग कर मात्रा संख्या, लघुगुरु निर्देश आदि का आश्रय लिया गया है। यहाँ ध्यातव्य है कि सूत्र में आचार्य पिङ्गल ने मात्रा शब्द का प्रयोग न करके एक मात्रा के लिए 'ल' का प्रयोग किया है अर्थात् 'ल' का अर्थ एक मात्रा से है, लघुवर्ण से नहीं। इस अध्याय में मात्रिक छन्दों की चर्चा 45 सूत्रों के माध्यम से की गई है।

पंचम अध्याय–पंचम अध्याय में वृत्तों के प्रकार, सम, विषम और अर्द्धसम वृत्तों के लक्षणों का उल्लेख किया है, जिसके अर्न्तगत आचार्य ने समानी प्रमाणी या नाराच, वितान, पथ्या, चपला, विपुला, आपीड, प्रत्यापीड, मंजरी, अमृतधारा, उद्गता, सौरभक, ललित, उपस्थित पचुपित वर्द्धमान, शुद्धविराऽऋषभ, उपचित्रक, द्रुतमध्या, वेतवती, भर्द्रावराट्, केतुमती, आख्यानकी, हरिणप्लुता, अपरवम्त्र, पुष्पिताग्रा, यमवती शिखा , खज्जा आदि वृत्तों का लक्षण 53 सूत्रों में किया है।

षष्ठ अध्याय–इस अध्याय में तनुमध्या, कुमारललिता, चित्रपदा, विद्युन्माला, हंसरुत, भुजगिशशुसृता, हलमुखी, शुद्धविराट पणव, रुक्मवती, मयूरसारिणी, मत्ता, उपस्थिता, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा उपजाति, दोधक, शलिनी, वातोर्मी, भ्रमरविलसित, रथोद्धता, स्वागता, वृंता, श्येनी, विलासिनी, वंशस्था, इन्द्रवंशा, द्रुतविलम्बित, तोटक, पुट, जलोद्धगति, तत, कुसुमविचित्रा, चंचलाक्षिका, भुजंगप्रयात, स्रग्विणी, प्रतिमाक्षरा, कान्तोत्पीड़ा, वैश्वदेवी, वाहिनी और नवमालिनी नामक छन्दों के लक्षण 43 सूत्रों में निबद्ध हैं।

सप्तम अध्याय–36 सूत्रों के माध्यम से आचार्य पिङ्गल ने इस अध्याय में प्रहर्षिणी, रुचिरा, मत्तमयूर, गौरी, असम्बाधा, अपराजिता, प्रहरण कलिता, वसन्ततिलका सिंहोन्नता, उद्धीर्षणी, चन्द्रवर्ता, माला, मणिगुर्णानरुर, मालिनी, ऋषभगजविलसित, हरिणी, पृथ्वी, वंशपत्रपतित, मन्द्राकान्ता, शिखरिणी, कुसुमित लतावेल्लिता,

शार्दूलविक्रीडित, सुवदना, वृत्त, स्रग्धरा, मद्रक, अश्वललित, मत्ताक्रीड़ा, तन्वी, क्रौंचपदा, भुजंगविजृम्भित, अपवाहक आदि छन्दों के तथा चण्डवृष्टिप्रायातादि दण्डकों के लक्षण सूत्र रूप में दिये हैं।

अष्टम अध्याय–अष्टम अध्याय में कुड्मलदन्ती, वरतनु जलधरमाला, गौरी, ललना, कनकप्रभा, कुटिलगति, वरसुन्दरी, कुटिला, शैलशिखा, वरयुवती, अतिशयिनी, अवितथ, कोकिलक, विबुधप्रिया, नाराचक, विस्मिता, शशिवदना आदि छन्दों के लक्षण दिये है और अन्त में प्रस्तार निरूपण, संख्या ज्ञान की विधि आदि से सम्बन्धित नियम बतलाये गये हैं।

बोध प्रश्न–1

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के ठीक उत्तरों पर सही (√) का चिन्ह लगाइये।**
   I. छन्दशास्त्र के रचयिता कौन है? (आचार्य पिङ्गल /आचार्य सैवत)
   II. पिङ्गल का जन्मस्थान कहाँ माना जाता है? (कोंकण/अमरकंटक)
2. **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।**
   I. छन्दशास्त्र में .....अध्याय हैं। (8/6)
   II. छन्दशास्त्र के टीकाकार ..... हैं। (भट्ट हलायुध/शिव)
   III. यादवप्रकाश ने .....ग्रन्थ की रचना की। (वैजयन्ती कोश/राधारमण)

बोध प्रश्न–2

1. पिङ्गल के जीवनवृत्त को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2. पिङ्गल के छन्दशास्त्र के विषयवस्तु को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास प्रश्न–1

1. पिङ्गल कृत छन्दशास्त्र का सामान्य परिचय दीजिए।

1.5 सारांश

इस इकाई–1 में छन्दशास्त्र के परिचय के अर्न्तगत छन्द शब्द का अर्थ, आचार्य पिङ्गल का जीवनवृत्त एवं कर्तृत्व, छन्दशास्त्र ग्रन्थ के विषयवस्तु तथा छन्दसूत्र पर प्रमुख टीकाएँ और भाष्य को स्पष्ट किया गया है।

1.6 शब्दावली

अक्षर – छन्द शास्त्र में शब्द के उस भाग को अक्षर कहते हैं, जिसे एक ही बार के उच्चारण में सरलता से बोला जा सके।

यथा – रामम् पद में दो अक्षर हैं–रा तथा मम्।

वृत्त – लघु–गुरु अक्षरों की गणना से होने वाली पद्य रचना वृत्त कहलाती है। इसी को 'वर्णिक छन्द' भी कहा जाता है।

1.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- ध्वन्यालोक, आनन्दवर्धन, आचार्य विश्वेश्वर, ज्ञानमण्डल लि. वाराणसी
- साहित्य दर्पण, विश्वनाथ, व्याख्याकार डा. सत्यव्रत सिंह, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी, 1976
- छन्दोमंजरी, जगन्नाथ शास्त्री तैलङ्ग, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी 2013
- वृत्तरत्नाकर, केदारभट्ट, संपादक ब्रह्मानन्द त्रिपाठी एवं बलदेव उपाध्याय, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी

1.8 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न–1

1. (प) आचार्य पिङ्गल (पप) कोंकण
2. (प) 8 (पप) भट्ट हलायुध (पपप) वैजयन्ती कोश

बोध प्रश्न–2

1. छन्दशास्त्र के प्रवर्तक आचार्य पिङ्गल है। इनके द्वारा रचित छन्द शास्त्र वैदिक एवं लौकिक दोनों प्रकार के छन्दों के प्रतिपादन की दृष्टि से यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है। पिङ्गलकृत छन्दशास्त्रा में कुल आठ अध्याय है। इनमें से प्रारम्भ के तीन अध्यायों और चतुर्थ अध्याय के सांतवे सूत्र तक आचार्य पिङ्गल ने वैदिक छन्दों का प्रतिपादन किया है और चतुर्थ अध्याय के आठवें सूत्र से लेकर आठवें अध्याय तक लौकिक छन्दों का निरूपण किया है। इस प्रकार वैदिक छन्दों का वर्णन 104 सूत्रों में तथा लौकिक छन्दों का निरूपण 204 सूत्रों में है।
2. पिङ्गल ने अपने छन्दशास्त्र को आठ अध्यायों में बांटा है।
3. **अभ्यास प्रश्न–** इस प्रश्न का उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।